"शक्ति अनुसंधान केंद्र"

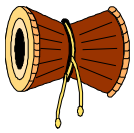

—: संक्षिप्त हवन विधि :—

आज के युवाओं के पथ प्रदर्शक एवं भारतीय
संस्कृति के रक्षक परम पूज्य युवा गुरू — **श्री अभिषेक कुमार**

'यज्ञो वै विष्णु' भारतीय संस्कृति में यज्ञों की बहुत महत्ता है। यज्ञों का संक्षिप्त रूप ही हवन है। वास्तव में किसी भी पूजन की पूर्णता उसके बाद हवन में ही है। हवन के बिना मंत्र जप अधूरा ही है। अग्नि ही देवताओं और मनुष्यों के बीच माध्यम का कार्य करते हैं। अग्नि के द्वारा ही मनुष्यों द्वारा दी गई आहुतियाँ देवताओं को प्राप्त होती हैं। नीचे मैं संक्षप्त हवन विधि दे रहा हूँ, जो कि युग निर्माण योजना गायत्री परिवार के संस्थापक 'पं0 श्री राम शर्मा आचार्य एवं ब्रह्मवर्चस' द्वारा प्रेरित है। सामान्य व्यक्तियों के लिए तांत्रोक्त अनुष्ठान संभव नहीं है। अतः यह विधि सरल एवं सर्वोपयोगी है। इस विधि द्वारा किसी भी देवी—देवता के लिए हवन किया जा सकता है। हवन हमेशा हवन कुण्ड में ही संपन्न किया जाना चाहिए। कच्ची मिट्टी से बना हवन कुण्ड सर्वश्रेष्ठ होता है।

// अग्निस्थापनम् //

ॐ **भूर्भूवः स्वः** — यह मंत्र कहते हुए एक कपूर के टुकड़े को पूजन में प्रज्वलित दीप से या माचिस से सुलगाकर पीतल या तांबे के चम्मच में रखें। उसमें छोटे—छोटे हुमाद के टुकड़े लगा दें और यह मंत्र पढ़ें।

ॐ भूर्भूवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि, पृष्ठेऽग्निमन्नाद्यायादधे। अग्नि दूतं पुरोदधे, हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँऽआसादयादिह। ॐ अग्नये नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

—अग्नि को हवन कुंड के मध्य में स्थापित कर दें। इसके बाद गन्ध (पीला सिंदूर) अक्षत एवं पुष्प से अग्नि पूजन करें।

// अग्नि प्रदीपनम् //

इसके बाद अग्नि पर यह मंत्र पढ़ते हुए हवा करें। — (हवा इतना न करें कि अग्नि ही बुझ जाए)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि, त्वमिष्टा पूर्ते च सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन, विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

// समिधाधानम् //

यज्ञपुरूष अग्निदेव के प्रकट होने पर पतली—पतली छोटी चार समिधायें घी में डुबोकर एक—एक करके चार मंत्रों के साथ स्वाहा बोलते हुए चार बार में समर्पित की जाए।

1. **ॐ अयन्त इध्म आत्मा, जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया, पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन, अन्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम।।**
2. **ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत, घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन हव्या जुहोतन स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।।**
3. **ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे, घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम।।**
4. **ॐ तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो, घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा। इदं अग्नये अंगिरसे इदं न मम।।**

// जलप्रसेचनम् //

अग्नि और जल का युग्म — प्रोक्षणी पात्र (बिना हत्थे वाला चम्मच जैसा उपकरण) में पानी लेकर निम्न मंत्रों से वेदी के बाहर चारों दिशाओं में डालें।

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व।। (पूर्व दिशा में)

ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व।। (पश्चिम दिशा में)

ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व।। (उत्तर दिशा में)

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं, प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः, केतं नः पुनातु, वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।
(चारों दिशाओं में जल का घेरा दें)

// आज्याहुतिः //

सर्वप्रथम इन सात मंत्रों से सात आहुतियाँ केवल घी की दी जाती हैं। इन आहुतियों के साथ हवन सामग्री नहीं होमी जाती। घी जमीन पर न टपके। स्वाहा उच्चारण के साथ ही आहुति दी जाये। स्रुवा लौटाते समय घृत पात्र के समीप ही रखे हुए, जल भरे प्रणीता पात्र (कटोरी) में बचे हुए घी की एक बूंद टपका देनी चाहिए।

1. ॐ **प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम्।।**
2. ॐ **इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं न मम्।।**
3. ॐ **अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम्।।**
4. ॐ **सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम्।।**
5. ॐ **भूः स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम्।।**
6. ॐ **भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम्।।**
7. ॐ **स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम्।।**

// मंत्राहुतिः //

अब मैंने जो आपको मंत्र दिया है, उसके अंत में 'स्वाहा' लगाकर हवन सामग्री से आहुति दें। मध्यमा और अनामिका अंगुलियों पर ऊपर की ओर सामग्री रखकर अंगूठे द्वारा सहारा देकर खिसकायें। हवन सामग्री अग्नि में ही गिरे। जिन मंत्रों के अंत में नमः है, उसमें से नमः हटाकर स्वाहा लगायें। जिन मंत्रों के अंत में स्वाहा लगा हुआ है, उसमें दुबारा न लगायें।

जैसे – पहला प्रकार –

जप मंत्र — ॐ **गं गणपतये नमः। ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः।**

हवन मंत्र — ॐ **गं गणपतये स्वाहा। ॐ ऐं सरस्वत्यै स्वाहा।**

दूसरा प्रकार–

जप मंत्र — ॐ **क्रीं स्वाहा। ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।**

हवन मंत्र — जप मंत्र के ही अनुसार – ॐ **क्रीं स्वाहा। ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।**

तीसरा प्रकार –

जप मंत्र — ॐ **ह्रीं स्त्रीं हुं फट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ॐ। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।**

हवन मंत्र — ॐ **ह्रीं स्त्रीं हुं फट् स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।**

ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं स्वाहा। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ॐ स्वाहा। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा।

// स्विष्टकृत्होमः //

यह प्रायश्चित आहुति है। इसमें मिठाई, फल या प्रसाद समर्पित किया जाता है। मंत्र आहुति देने के पश्चात् इसे संपन्न करें। स्रुचि (घृत होमने वाला चम्मच) में मिठाई, फल एवं घी भरकर प्रमुख आहुति देने वाला व्यक्ति संपन्न करे। स्वाहा के साथ अग्नि में प्रसाद समर्पण करें।

ॐ यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं, यद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते, सर्वप्रायश्चिताहुतीनां कामानां, समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदं अग्नये स्विष्टकृते इदं न मम्।।

// पूर्णाहुतिः //

अपने सभी मंत्रों का क्रम से हवन करने के बाद पूर्णाहुति करें। इसका अर्थ यह है कि अब हवन कार्य पुरा हुआ। इसके बाद अग्नि में किसी भी मंत्र से आहुति नहीं देनी चाहिए। पूर्णाहुति के लिए एक सुपारी अथवा सुखा नारियल का गोला एवं घृत चम्मच या स्रुचि में लें तथा दूसरे स्वाहा के साथ आहुति दें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते।।

ॐ पूर्णादर्वि परापत, सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणा वहा, इषूर्जꣳशतक्रतो स्वाहा।। ॐ सर्वं वै पूर्णं ꣳ स्वाहा।।

// वसोर्धारा //

पूर्णाहुति के बाद घृत की अंतिम बड़ी आहुति देनी चाहिए। चम्मच में पिघला हुआ घी ले लें और मंत्र पढ़ते हुए लगातार अग्नि में टपकाते जायें। घी डालने का क्रम टुटे नहीं।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं, वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः, पवित्रेण शतधारेण सुप्वा, कामधुक्षः स्वाहा।।

इस प्रकार हवन कार्य पूर्ण हुआ। हवन के बाद आरती होनी चाहिए। पहली सात आहुति घी के रूप में जो जल में टपकायी गयी है, उसे आरती, प्रदक्षिणा इत्यादि के बाद अपने अंगों में अंगुलियों से लगा लें। इससे देव शक्ति मन, मस्तिष्क एवं तन में आएगी। जहाँ ***ꣳ*** चिन्ह आया है, उसे **'ग्वं'** पढ़ें। (***ꣳ*** - ग्वं)

// वैदिक आरती – निराजनम् //

आरती उतारने का तात्पर्य है कि परमार्थ परायणता का ज्ञान प्रकाश दसों दिशाओं में फैले, सर्वत्र उसी का शंख बजे, घण्टा निनाद सुनाई पड़े और हर धर्मप्रेमी इस प्रयोजन के लिए उठ खड़ा हो। थाली में पुष्पादि सजाकर आरती जलायें, तीन बार जल घुमाकर यज्ञ भगवान व देव प्रतिमाओं की आरती उतारें, पुनः तीन बार जल घुमाकर उपस्थित जनों तक आरती पहुंचा दें।

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरूषं तथान्ये।

विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा, तस्मै नमो विघ्नविनाशाय।।

ॐ यं ब्रह्मा वरूणेन्द्ररुद्रमरुतः, स्तुवन्ति दिव्यैः स्तवैः, वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः, गायन्ति यं सामगाः।।

ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो, यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः, देवाय तस्मै नमः।।

// घृतावघ्राणम् //

घृत आहुतियों से बचने पर टपकाया हुआ घृत, जल भरे प्रणीता पात्र में जमा रहता है। इसे थाली में रखकर सभी उपस्थित लोगों को दिया जाना चाहिए। इस जल मिश्रित घृत में दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग को डुबोते जायें और दोनों हथेलियों पर मल लिया जाना चाहिए। मंत्र बोलते समय दोनों हाथ यज्ञ कुण्ड की ओर इस तरह रखें, मानों उन्हें तपाया जा रहा हो। यज्ञीय वातावरण एवं संदेश को मस्ति क में भर लेने, आँखों में समा लेने, कानों में गुंजाते रहने, मुख से चर्चा करते रहने और उसी दिव्य गंध को सूंघते रहने, वैसे ही भाव भरा वातावरण बनाये रखने की सामर्थ्य पाने की इच्छा रखने वालों को यज्ञ भगवान का प्रसाद घृत अवघ्राण से प्राप्त होता है।

ॐ तनूपा अग्नेऽसि, तन्वं मे पाहि।
ॐ आयुर्दा अग्नेऽसि, आयुर्मे देहि।।
ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि, वर्चो मे देहि।
ॐ अग्ने यन्मे तन्वा, ऽऊनन्तन्मऽआपृण।।
ॐ मेधां मे देवः, सविता आदधातु।
ॐ मेधां मे देवी, सरस्वती आदधातु।।
ॐ मेधां मे अश्विनौ, देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।।

त्वमेका भवानी त्वमेका

हे माता! भवानी इस जगत में एक मात्र तुम्हीं हो। तुम्हीं स्वाहा बनकर देवताओं को, स्वधा बनकर पितरों को और दक्षिणा बनकर ब्राह्मणों को तथा सिद्धिदात्री बनकर साधकों को सिद्धियाँ प्रदान करती हो। यज्ञ की अग्नि एक मात्र तुम्हारी ही शक्ति से प्रज्वलित होती है।

// भस्मधारणम् //

यज्ञ भगवान का प्रसाद भस्म के रूप में शरीर के विभिन्न अंगों पर धारण किया जाता है। स्फ्य की पीठ पर भस्म लगा ली जाती है और सभी लोग अनामिका अंगुली में लेकर मंत्र में बताये हुए स्थानों पर क्रमशः लगाते हैं।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः, इति ललाटे। **ॐ कश्पस्य त्र्यायुषं, इति ग्रीवायाम्।**

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं, इति दक्षिणबाहुमूले। **ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं, इति हृदि।**

हिन्दुओं द्वारा मजारों पर जाकर इबादत करना, चादर चढ़ाना, अपने धर्म एवं देवी-देवताओं के प्रति महान धार्मिक अपराध है। ऐसा न करें।

इस हवन विधि का प्रकाशन परम-पूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी एवं गायत्री परिवार के संस्थापक पं0 श्री राम शर्मा आचार्य के प्रति सच्ची श्रद्धांजली है।

जिस घर में प्रत्येक दिन हवन होता है, वहाँ साक्षात देवता ही निवास करते हैं। ऐसे घरों में रोग, शोक एवं दरिद्रता कभी भी पास नहीं आते। प्रत्येक समय में हवन करने का अलग फल होता है। प्रात: काल हवन करने से सात्विक शक्ति प्राप्त होती है, तो शाम में राजसी शक्ति, वहीं रात्रि काल में किया गया हवन तामसी देवी को प्रिय है। रात्रि काल में किया गया हवन विशेष तांत्रिक सिद्धि प्राप्ति हेतु किया जाता है। शक्ति अनुसंधान केन्द्र में आपके जीवन के प्रत्येक समस्या के निवारण हेतु प्रत्येक पूर्णिमा को विशेष हवन किया जाता है। आप भी अपना नाम, पिता का नाम, गोत्र, वर्तमान समस्या लिखकर भेजें एवं अपनी समस्या का घर बैठे मुफ्त में समाधान करवायें। कृपया संग में अपनी हाल की खींची हुई एक तस्वीर भी भेजें।

–: सौजन्य से :–

श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)

परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.

Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

श्री गायत्री यंत्र

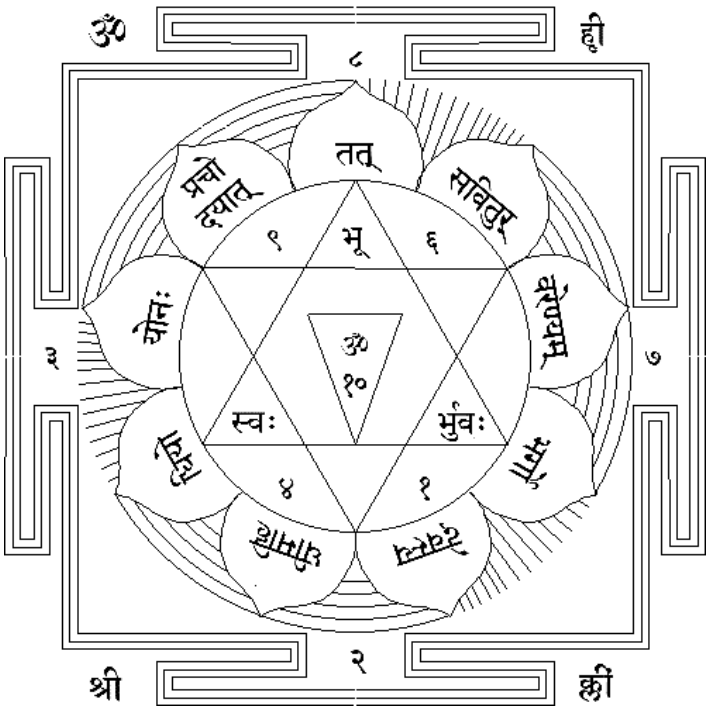

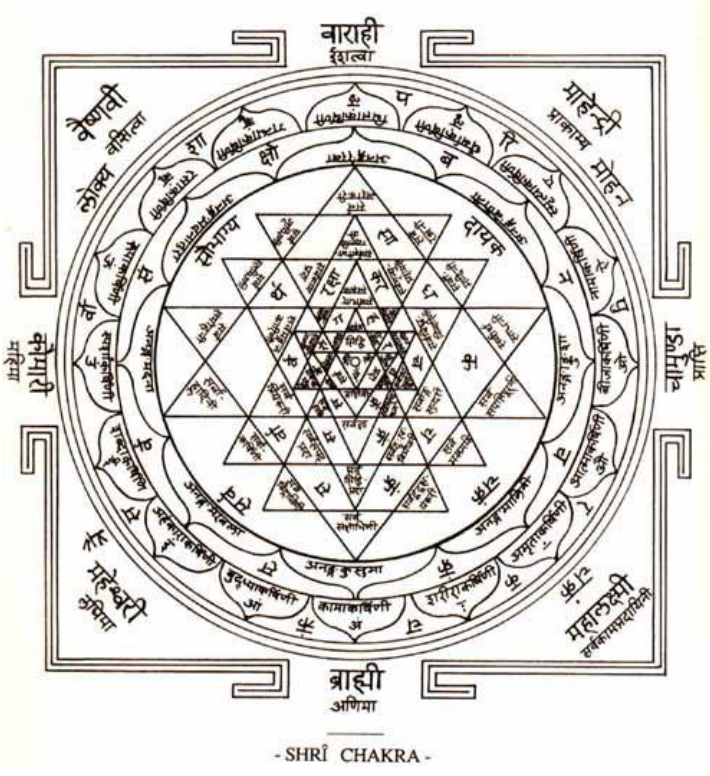

"शक्ति अनुसंधान केंद्र"

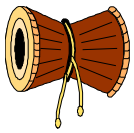

–: दैनिक हवन विधि :–

आज के युवाओं के पथ प्रदर्शक एवं भारतीय
संस्कृति के रक्षक परम पूज्य युवा गुरू – **श्री अभिषेक कुमार**

'यज्ञो वै विष्णु' भारतीय संस्कृति में यज्ञों की बहुत महत्ता है। यज्ञों का संक्षिप्त रूप ही हवन है। वास्तव में किसी भी पूजन की पूर्णता उसके बाद हवन में ही है। हवन के बिना मंत्र जप अधूरा ही है। अग्नि ही देवताओं और मनुष्यों के बीच माध्यम का कार्य करते हैं। अग्नि के द्वारा ही मनुष्यों द्वारा दी गई आहुतियाँ देवताओं को प्राप्त होती हैं। नीचे मैं संक्षिप्त दैनिक हवन विधि दे रहा हूँ, जो कि आर्य समाज द्वारा प्रेरित है एवं दैनिक संध्या करने वालों के लिए है। यह हवन विधि उनके लिए है, जो किसी विशेष देवी–देवता के लिए हवन न कर के केवल दैनिक संध्या–उपासना संपन्न करते हैं। इसमें केवल वैदिक मंत्रों का प्रयोग हुआ है। अतः यह विधि सरल एवं सर्वोपयोगी है। हवन हमेशा हवन कुण्ड में ही संपन्न किया जाना चाहिए। कच्ची मिट्टी से बना हवन कुण्ड सर्वश्रेष्ठ होता है। इस विधि से हवन बहुत ही कम समय एवं खर्च में संपन्न हो जाते हैं।

आचमन – सर्वप्रथम हाथ में जल लेकर इन तीनों मंत्रों से एक–एक कर आचमन करें।

1. ॐ अमृतोपरस्तरणमसि स्वाहा।।
2. ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।।
3. ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।।

न्यास – जल से अंग स्पर्श करने के लिए मंत्र। दाहिने हाथ की अंगुलियों को जल से गिला कर लें और तत्व मुद्रा द्वारा दिए गए अंगों का स्पर्श करें। (तत्व मुद्रा–अंगुष्ठ, अनामिका एवं मध्यमा को एक साथ संयुक्त करने से बनता है। इसके अग्र भाग द्वारा स्पर्श)

1. ॐ **वाङ्मे अस्येऽस्तु।।** (इस मंत्र से मुख का स्पर्श करें।)
2. ॐ **नसोर्मे प्राणोऽस्तु।।** (इस मंत्र से नासिका के दोनों भागों का स्पर्श करें।)
3. ॐ **अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।।** (इस मंत्र से दोनों आँखों का स्पर्श करें।)
4. ॐ **कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।।** (इस मंत्र से दोनों कानों का स्पर्श करें।)
5. ॐ **बाह्वोर्मे बलमऽस्तु।।** (इस मंत्र से दोनों भुजाओं का स्पर्श करें।)
6. ॐ **ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु।।** (इस मंत्र से दोनों जांघों का स्पर्श करें।)
7. ॐ **अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।।** (इस मंत्र से पूरे शरीर को स्पर्श करें। दाहिने हाथ को सिर के ऊपर से नीचे पाँव की ओर दाहिने ओर से लायें।)

// अग्निस्थापनम् //

ॐ **भूर्भूवः स्वः** – यह मंत्र कहते हुए एक कपूर के टुकड़े को पूजन में प्रज्वलित दीप से या माचिस से सुलगाकर पीतल या तांबे के चम्मच में रखें। उसमें छोटे–छोटे हुमाद के टुकड़े लगा दें और यह मंत्र पढ़ें।

ॐ भूर्भूवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि, पृष्ठेऽग्निमन्नाद्यायादधे। अग्नि दूतं पुरोदधे, हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँऽआसादयादिह। ॐ अग्नये नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

–अग्नि को हवन कुंड के मध्य में स्थापित कर दें। इसके बाद गन्ध (पीला सिंदूर) अक्षत एवं पुष्प से अग्नि पूजन करें।

// अग्नि प्रदीपनम् //

इसके बाद अग्नि पर यह मंत्र पढ़ते हुए हवा करें। – (हवा इतना न करें कि अग्नि ही बुझ जाए)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि, त्वमिष्टा पूर्ते च सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन, विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

// समिधाधानम् //

यज्ञपुरूष अग्निदेव के प्रकट होने पर पतली–पतली छोटी चार समिधायें घी में डुबोकर एक–एक करके चार मंत्रों के साथ स्वाहा बोलते हुए चार बार में समर्पित की जाए।

1. ॐ **अयन्त इध्म आत्मा, जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया, पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन, अन्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम।।**
2. ॐ **समिधाऽग्निं दुवस्यत, घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन हव्या जुहोतन स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।।**
3. ॐ **सुसमिद्धाय शोचिषे, घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम।।**
4. ॐ **तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो, घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा। इदं अग्नये अंगिरसे इदं न मम।।**

// जलप्रसेचनम् //

अग्नि और जल का युग्म – प्रोक्षणी पात्र (बिना हत्थे वाला चम्मच जैसा उपकरण) में पानी लेकर निम्न मंत्रों से वेदी के बाहर चारों दिशाओं में डालें।

ॐ **अदितेऽनुमन्यस्व।। (पूर्व दिशा में)**

ॐ **अनुमतेऽनुमन्यस्व।। (पश्चिम दिशा में)**

ॐ **सरस्वत्यनुमन्यस्व।। (उत्तर दिशा में)**

ॐ **देव सवितः प्रसुव यज्ञं, प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः, केतं नः पुनातु, वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।** (चारों दिशाओं में जल का घेरा दें)

// चार घी की आहुतियाँ : आज्याहुतिः //

सर्वप्रथम इन चार मंत्रों से चार आहुतियाँ केवल घी की दी जाती हैं। इन आहुतियों के साथ हवन सामग्री नहीं होमी जाती। घी जमीन पर न टपके। स्वाहा उच्चारण के साथ ही आहुति दी जाये। स्रुवा लौटाते समय घृत पात्र के समीप ही रखे हुए, जल भरे प्रणीता पात्र (कटोरी) में बचे हुए घी की एक बूंद **'मम'** के उच्चारण के साथ टपका देनी चाहिए।

1. ॐ **अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम्।। (**इस मंत्र से वेदी के उत्तर भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति दें।)
2. ॐ **सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम्।।(**इस मंत्र से वेदी के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति दें।)

अब इस मंत्र से यज्ञकर्त्ता हवन कुण्ड के मध्य भाग में दो आहुति दें।

3. ॐ **प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम्।।**
4. ॐ **इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं न मम्।।**

// दैनिक अग्निहोत्र की प्रधान आहुतियाँ //

–: प्रातःकालीन आहुति के मंत्र :–

(इन मंत्रों से घृत के साथ–साथ अन्य हवन सामग्रियों से भी आहुतियाँ दी जा सकती हैं।)

1. ॐ सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।। 1।।
2. ॐ सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।। 2।।
3. ॐ ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।। 3।।
4. ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरूषसेन्द्रव्यता जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।। 4।।

–: सायंकालीन आहुति के मंत्र :–

1. ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।। 1।।
2. ॐ अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।। 2।।

3. ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।। 3।। (इस तीसरे मंत्र को मन में ही उच्चारण करके आहुति दें। इसे बोलना नहीं है, केवल स्वाहा बोलें)

4. ॐ सजूर्देवेन सवित्रा सजूरूषसेन्द्रव्यता जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।। 4।।

—: *दोनों समय आहुति के मंत्र* :—

(इन आठ मंत्रों से दोनों समय अर्थात् प्रातः और सायं काल दोनों समय आहुतियाँ दी जाती हैं।)

1. ॐ भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदं अग्नये प्राणाय इदं न मम् ।।

2. ॐ भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदं न मम्।।

3. ॐ स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदं आदित्याय व्यानाय इदं न मम्।।

4. ॐ भूर्भुवः स्वरअग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।।

5. ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।।

6. ॐ यां मेधां देवगणाः पितरोश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरू स्वाहा।।

7. ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा।।

8. ॐ अग्ने नय सुपथा राय अस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।।

—: *गायत्री मंत्र से आहुति* :—

अब तीन बार गायत्री मंत्र से आहुति दें – ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यम्, भर्गो देवस्य धीमहि। धीयो यो नः प्रचोदयात्।।

—: *पूर्णाहुति* :—

इस मंत्र से तीन बार घी से पूर्णाहुति करें – ॐ सर्वं वै पूर्णं ꣳ स्वाहा।।

(पूर्णाहुति मंत्र को तीन बार उच्चारण करना इन भावनाओं का द्योतक है कि शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक जैसे पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्यौलोक के उपकार की भावना से एवं आध्यात्मिक, अधिदैविक और अधिभौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु किया गया यह यज्ञानुष्ठान पूर्ण होने के बाद सफल एवं सिद्ध हो। इसका उद्देश्य पूर्ण हो।)

।। इति अग्निहोत्रमन्त्राः।।

इस प्रकार हवन कार्य पूर्ण हुआ। हवन के बाद आरती होनी चाहिए। पहली चार आहुति घी के रूप में जो जल में टपकायी गयी है, उसे आरती, प्रदक्षिणा इत्यादि के बाद अपने अंगों में अंगुलियों से लगा लें। इससे देव शक्ति मन, मस्तिष्क एवं तन में आएगी। जहाँ ***ꣳ*** चिन्ह आया है, उसे **'ग्वं'** पढ़ें। (***ꣳ*** - ग्वं)

// वैदिक आरती – निराजनम् //

आरती उतारने का तात्पर्य है कि परमार्थ परायणता का ज्ञान प्रकाश दसों दिशाओं में फैले, सर्वत्र उसी का शंख बजे, घण्टा निनाद सुनाई पड़े और हर धर्मप्रेमी इस प्रयोजन के लिए उठ खड़ा हो। थाली में पुष्पादि सजाकर आरती जलायें, तीन बार जल घुमाकर यज्ञ भगवान व देव प्रतिमाओं की आरती उतारें, पुनः तीन बार जल घुमाकर उपस्थित जनों तक आरती पहुंचा दें।

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरूषं तथान्ये। विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा, तस्मै नमो विध्नविनाशाय।।

ॐ यं ब्रह्मा वरूणेन्द्ररुद्रमरुतः, स्तुवन्ति दिव्यैः स्तवैः, वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः, गायन्ति यं सामगाः।।

ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो, यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः, देवाय तस्मै नमः।।

// घृतावघ्राणम् //

घृत आहुतियों से बचने पर टपकाया हुआ घृत, जल भरे प्रणीता पात्र में जमा रहता है। इसे थाली में रखकर सभी उपस्थित लोगों को दिया जाना चाहिए। इस जल मिश्रित घृत में दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग को डुबोते जायें और दोनों हथेलियों पर मल लिया जाना चाहिए। मंत्र बोलते समय दोनों हाथ यज्ञ कुण्ड की ओर इस तरह रखें, मानों उन्हें तपाया जा रहा हो। यज्ञीय वातावरण एवं

संदेश को मस्तिष्क में भर लेने, आँखों में समा लेने, कानों में गुंजाते रहने, मुख से चर्चा करते रहने और उसी दिव्य गंध को सूंघते रहने, वैसे ही भाव भरा वातावरण बनाये रखने की सामर्थ्य पाने की इच्छा रखने वालों को यज्ञ भगवान का प्रसाद घृत अवघ्राण से प्राप्त होता है।

ॐ तनूपा अग्नेऽसि, तन्वं मे पाहि।
ॐ आयुर्दा अग्नेऽसि, आयुर्मे देहि।।
ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि, वर्चो मे देहि।
ॐ अग्ने यन्मे तन्वा, ऽऊनन्तन्मऽआपृण।।
ॐ मेधां मे देवः, सविता आदधातु।
ॐ मेधां मे देवी, सरस्वती आदधातु।।
ॐ मेधां मे अश्विनौ, देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।।

जय वेदमाता गायत्री

हे माता! हे ब्रह्मस्वरूपिणी माता गायत्री तुम प्रातः काल बालस्वरूप में ब्रह्मरूपिणी, मध्याह्नकाल में तरूणीस्वरूप में विष्णुरूपिणी एवं सायंकाल प्रौढ़ रूप में साक्षात शिवा का रूप धारण करती हो। एकमात्र तुम्हारी ही शक्ति के प्रताप से यज्ञ विधान होता है। तुम ही वेदमाता हो अर्थात् संपूर्ण ज्ञान के मूल में एक मात्र तुम्हारी ही शक्ति कार्य करती है। तुम्हारे ही मंत्र के प्रताप से सभी देवगण परब्रह्मस्वरूप धारण करते हैं।

// भस्मधारणम् //

यज्ञ भगवान का प्रसाद भस्म के रूप में शरीर के विभिन्न अंगों पर धारण किया जाता है। स्फ्य की पीठ पर भस्म लगा ली जाती है और सभी लोग अनामिका अंगुली में लेकर मंत्र में बताये हुए स्थानों पर क्रमशः लगाते हैं।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः, इति ललाटे।
ॐ कश्पस्य त्र्यायुषं, इति ग्रीवायाम्।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं, इति दक्षिणबाहुमूले।
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं, इति हृदि।

हिन्दुओं द्वारा मजारों पर जाकर इबादत करना, चादर चढ़ाना, अपने धर्म एवं देवी-देवताओं के प्रति महान धार्मिक अपराध है। ऐसा न करें।

इस हवन विधि का प्रकाशन परम-पूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी एवं गायत्री परिवार के संस्थापक पं0 श्री राम शर्मा आचार्य तथा आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति सच्ची श्रद्धांजली है।

जिस घर में प्रत्येक दिन हवन होता है, वहाँ साक्षात देवता ही निवास करते हैं। ऐसे घरों में रोग, शोक एवं दरिद्रता कभी भी पास नहीं आते। प्रत्येक समय में हवन करने का अलग फल होता है। प्रातः काल हवन करने से सात्विक शक्ति प्राप्त होती है, तो शाम में राजसी शक्ति, वही रात्रि काल में किया गया हवन तामसी देवी को प्रिय है। रात्रि काल में किया गया हवन विशेष तांत्रिक सिद्धि प्राप्ति हेतु किया जाता है। शक्ति अनुसंधान केन्द्र में आपके जीवन के प्रत्येक समस्या के निवारण हेतु प्रत्येक पूर्णिमा को विशेष हवन किया जाता है। आप भी अपना नाम, पिता का नाम, गोत्र, वर्तमान समस्या लिखकर भेजें एवं अपनी समस्या का घर बैठे मुफ्त में समाधान करवायें। कृपया संग में अपनी हाल की खींची हुई एक तस्वीर भी भेजें।

—: सौजन्य से :—

श्री अभिषेक कुमार, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)

परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:— हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.

Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com